जें जें घडेल तें तें घडो

ध्रुवपद

जो भी होना हो, होने दो।
चाहे मेरी देह रहे या न रहे।

पद १

परन्तु, हे पण्डरीनाथ,
मैं आपके चरणकमलों को कदापि नहीं छोड़ूँगा।

पद २

चाहे मुझे नाना प्रकार के क्लेश सहने पड़ें,
चाहे दुर्भाग्य से मेरा सामना हो,
मैं अपने मुख से भगवन्नाम रटता रहूँगा,
रामकृष्ण हरि रटता ही रहूँगा।

पद ३

नामदेव केशव से, भगवान श्रीकृष्ण से कहते हैं :
“जो भी होता है, वह मुझे नहीं
बल्कि इस देह को होता है।”

परिचय : उदयन भट

मेरे मन में स्पष्ट रूप से बसी स्मृतियों में से एक ऐसी है जो हमेशा मेरे मन में अंकित रहेगी और वह है गुरुदेव सिद्धपीठ के केन्द्र, उसके हृदय-स्थल, गुरुचौक में गूँजते अभंगों व भजनों के स्वरों को सुनना।

जब मैं छोटा था तो मैं अपनी माँ और बहन के साथ गुरुदेव सिद्धपीठ जाया करता। मुझे याद है कि अनेक बार जब मैं सुबह आश्रम पहुँचता तब श्रीगुरुमाई गुरुचौक में दर्शन दे रही होतीं। उनका आसन बाबा मुक्तानन्द के समाधि-मन्दिर के बाहर की एक दीवार के बिलकुल पास ही होता।

भारत में यह प्रथा है कि आपमें जो भी गुण और प्रतिभा हो, उन्हें आप श्रीगुरु को अर्पित करें ताकि श्रीगुरु से प्राप्त आशीर्वादों व सिखावनियों के लिए आप उन्हें अपनी कृतज्ञता अर्पित कर सकें। इसलिए जो संगीत में निपुण थे वे दर्शन के दौरान गाते व अपने वाद्ययन्त्र बजाते। ऐसे लोगों के लिए गुरुचौक में एक स्थान निर्धारित था जहाँ वे अपनी संगीत-कला अर्पित करते थे; यह स्थान भगवान नित्यानन्द की मूर्ति के पास होता, जहाँ वे सफ़ेद जामुन के वृक्ष, आम के वृक्ष और रातरानी की लता के बीच खड़े हैं।

दर्शन के दौरान, अकसर ये संगीतकार सन्त-कवियों के भजन गाया करते और इसके साथ-साथ संगीत-वादन भी होता। जैसे ही मैं आश्रम-द्वार के अन्दर क़दम रखता, इन धुनों के हवा में तैरते उस सुमधुर संगीत की गूँज मेरे कानों में पड़ती; मैं उस कर्णप्रिय संगीत के सुरों में डूब जाता। कैसा आनन्द मिलता मुझे! आश्रम में पाँव रखते ही मैं ऊर्जा और उल्लास से भर जाता; और जब मुझे ये ध्वनियाँ सुनाई देतीं तो मैं गुरुचौक की ओर खिंचा चला जाता जहाँ गुरुमाई जी दर्शन दे रही होतीं। मेरा हृदय आनन्दविभोर हो उठता।

छः वर्ष की आयु तक आते-आते, मैंने तबला सीखना शुरू कर दिया था और चूँकि मैं सिद्धयोग नामसंकीर्तन व स्वाध्याय सुनते हुए बड़ा हुआ हूँ, मैंने बड़ी सहजता से काफ़ी हद तक सिद्धयोग संगीत के मूल सिद्धान्तों को आत्मसात् कर लिया। परन्तु गुरुदेव सिद्धपीठ में नौ, दस, बारह, पन्द्रह साल की आयु में हुए अनुभव बहुत ही रचनात्मक रहे जिन्होंने मेरी कला को गढ़ने में अमिट छाप छोड़ी और उसमें निर्णायक योगदान दिया। मैं आश्रम में संगीत-सेवा अर्पित करने लगा; सिद्धयोग महोत्सवों के दौरान होने वाले नामसंकीर्तन सप्ताहों में मैं तबला बजाने लगा। दोपहर और देर-रात में होने वाले नामसंकीर्तन युवा संगीतकारों के लिए अभ्यास करने का एक सुअवसर होते थे—उस समय वहाँ कम ही लोग होते थे! हम मुक्तरूप से बजा सकते थे और इस बात की चिन्ता भी नहीं करनी पड़ती कि कहीं हम हारमोनियम पर ग़लत सुर तो नहीं लगा रहे हैं या तबले या मृदंग पर ग़लत थाप तो नहीं पड़ रही।

सच कहूँ तो यह हमारे खेल के दिन जैसा होता जब कोई भी बड़ा-बुज़ुर्ग व्यक्ति हमें यह बताने के लिए वहाँ नहीं होता कि हम क्या करें, क्या न करें।

वर्ष २००० और २००१ में जब श्रीगुरुमाई गुरुदेव सिद्धपीठ आई थीं तब मैं पच्चीस वर्ष का था। हममें से कई लोग जो आश्रम में थे, सब ने यह तय किया कि हम गुरुमाई जी के आगमन पर उनके लिए एक 'स्वागत' गीत गाएँगे। मैं इस प्रस्तुति के लिए कन्डक्टर यानी संगीत-निर्देशक की सेवा अर्पित करने के लिए आगे आया—और इसे करते हुए मैंने पाया कि मेरे अन्दर इसे करने का एक स्वाभाविक कौशल है!

वर्ष २००० में ही गुरुदेव सिद्धपीठ में अपनी टीचिंग्स विज़िट से ठीक पहले गुरुमाई जी ने श्री मुक्तानन्द आश्रम में प्रथम प्रेमोत्सव संगीत रिट्रीट का शुभारम्भ किया था। इस रिट्रीट में भाग लेकर सिद्धयोग संगीत सेवाकर्ताओं ने सिद्धयोग संगीत के मूल सिद्धान्तों को सीखा व उनका अभ्यास किया ताकि वे सिद्धयोग संगीत को सँजोकर रखने के लिए इसके संरक्षक के रूप में तैयार हों। इस रिट्रीट के डायरेक्टरों की टीम टीचिंग्स विज़िट में सहयोग देने के लिए गुरुदेव सिद्धपीठ आई थी और जब उन्होंने मुझे स्वागत-गीत का निर्देशन करते हुए देखा तो उन्होंने मुझे आने वाली प्रेमोत्सव संगीत रिट्रीट में भाग लेकर निपुण संगीत-निर्देशकों से प्रशिक्षण प्राप्त करने को कहा। इस प्रकार मैं भी सिद्धयोग संगीत-निर्देशक [कन्डक्टर] बन पाया।

इसलिए यह मेरे लिए सम्मान की बात है कि मैं आपको उस अभंग के बारे में बताऊँ जिसे सिद्धयोग संगीत सेवाकर्ता के रूप में सुनने का, जिसका वादन करने और संगीत-निर्देशन करने का मैंने आनन्द उठाया है और वह अभंग है : "जें जें घडेल तें तें घडो।"

जब मैं सन्त-कवि नामदेव महाराज के इस अभंग के शब्दों को सुनता हूँ व उन पर चिन्तन-मनन करता हूँ तो जो विचार तत्काल मेरे मन में आता है वह यह कि यह समर्पण का गीत है—*आनन्दपूर्ण* समर्पण का गीत। एक मराठी व्यक्ति होने के नाते मुझे लगता है कि यह अभंग हमारे नववर्ष, गुढीपाडवा के लिए सबसे उत्तम है। गुढीपाडवा आगे बढ़ने का समय है, आने वाले माह अपने साथ जो कुछ भी लाएँगे, उसे ध्यान में रखते हुए अपने संकल्पों को पुनर्नवीन करने का और उनके प्रति पुनः वचनबद्ध होने का समय है। नामदेव महाराज सिखाते हैं कि जो होना है, वह होगा ही—और यदि हम अपने हृदय की, अपनी आत्मा की शक्ति और इसके दृढ़ विश्वास के साथ जुड़े रहें तो हम स्थिर रह सकते हैं, और निश्चय ही, हम खुश भी रह सकते हैं, फिर चाहे हमारा सामना कैसी भी परिस्थिति से हो।

सभी अभंगों की ही तरह, नामदेव महाराज ने इस अभंग को भी स्थानीय भाषा में ही लिखा है। उनका जन्म महाराष्ट्र के नरसी गाँव में हुआ, अतः उन्होंने मराठी भाषा में इस अभंग को लिखा है। "जें जें घडेल तें तें घडो" में, यद्यपि केवल तीन पद हैं और यह अत्यन्त सरल मराठी भाषा में लिखा गया है, तथापि मैं आपको बताना चाहता हूँ कि इन तीन पदों में ही नामदेव महाराज वह *सब कुछ* दे देते हैं जो एक जिज्ञासु खोज रहा है; वे यह समझने में आपकी सहायता करते हैं कि वह क्या है जो जीवन में सचमुच महत्त्वपूर्ण है और सच्चा पोषण आपको कहाँ से मिलता है। नामदेव महाराज सिखाते हैं कि यह पोषण हमें भगवान पर अपनी अटूट आस्था से, भगवान पर अपने अडिग विश्वास से और भगवान का नाम भजने से मिलता है।

वर्ष २००० की गर्मियों में श्रीगुरुमाई के कहने पर डिनीस थॉमस ने भारत के महान सन्त-कवियों के जीवन पर आधारित 'गोल्डन टेल्स' [Golden Tales] का निर्देशन किया। जो बच्चे उस समय श्री मुक्तानन्द आश्रम में अपने माता-पिता व अभिभावकों के साथ आए हुए थे, वे ही इन नाटिकाओं में अभिनेता, सूत्रधार, गायक व नर्तक थे। हर 'गोल्डन टेल' के अन्त में श्रीगुरुमाई, संगीत मण्डली के साथ एक भजन, अभंग या कव्वाली गातीं जिसमें बहुत सारे बच्चे होते। यह भजन, अभंग या कव्वाली प्रायः उन्हीं सन्त-कवि द्वारा लिखित होती जिनकी जीवन-गाथा को अभी-अभी मंच पर प्रस्तुत किया गया होता।

"जें जें घडेल तें तें घडो" अभंग, नामदेव महाराज के जीवन पर आधारित 'गोल्डन टेल' के बाद गाया गया था। श्रीगुरुमाई ने इस अभंग की संगीत-रचना की थी जो इस अभंग की पारम्परिक धुन पर आधारित थी। इस अभंग की रिकॉर्डिंग और हर 'गोल्डन टेल' के बाद श्रीगुरुमाई द्वारा युवाओं के साथ गाए गए सभी भजन, 'Sounds of the Heart' [हृदय के बोल] नामक सी. डी. के रूप में सिद्धयोग बुकस्टोर पर उपलब्ध हैं।

मुझे याद है कि वर्ष २००० और २००१ में श्रीगुरुमाई की गुरुदेव सिद्धपीठ की टीचिंग्स विज़िट की अन्तिम तीन रात्रियों पर गुरुमाई जी ने कहा कि सभी लोग 'गोल्डन टेल्स' के भजन व अभंग गाएँ। यह मेरा महान सद्भाग्य था कि मुझे इन कीर्तनों के कन्डक्टर की सेवा अर्पित करने का अवसर मिला। जो भी गुरुदेव सिद्धपीठ हो आया है, उसे पता होगा कि रात के समय गुरुचौक के आकाश में क्या जादू होता है। और श्रीगुरुमाई की टीचिंग्स विज़िट्स के समापन की वे रात्रियाँ तो *विशेष रूप से* जादुई लगती थीं।

गुरुदेव सिद्धपीठ में ऐसा पहली बार हुआ था कि किसी एक गायक या एक छोटे समूह के बजाय, हॉल में उपस्थित *हर व्यक्ति* भजन व अभंग गा रहा था। उस संगीत मण्डली में लगभग पच्चीस लोग थे,

जिनमें भारत के संगीत सेवाकर्ता और वे सेवाकर्ता शामिल थे जो श्रीगुरुमाई की टीचिंग्स विज़िट में सेवा अर्पित करने व उसमें सहयोग देने भारत आए थे। और यही नहीं, अधिकतर लोग जो भाग ले रहे थे, उन्हें भी ये भजन व अभंग आते थे, इसलिए वे भी साथ में गा रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो हर कोई भारतीय भक्ति-संगीत की एक बड़ी-सी संगीत मण्डली का भाग बन गया हो।

उन तीन दिनों के लिए, हर व्यक्ति व सब कुछ इसी बात पर केन्द्रित था कि शाम को क्या होगा। लोग सत्संग का बेसब्री से इन्तज़ार करते। दिनभर, वे केवल इसी की बात किया करते। सेवा करते समय वे भजन व अभंग गाते। बस यही अन्दाज़ा लगाते हुए कि आज क्या होने वाला है, एक बड़ी-सी मुस्कान उनके चेहरों पर हुआ करती। यह रासलीला की तरह होता, जैसे सभी गोपियाँ भगवान श्रीकृष्ण के साथ नृत्य करने की प्रतीक्षा में हों।

जब सत्संग का समय निकट आता तो लोग समय से पहले गुरुचौक पहुँचने के लिए रात का भोजन जल्दी करके तुरन्त गुरुचौक पहुँचते। देखते ही देखते गुरुचौक का प्रांगण पूरा भर जाता। वातावरण में लोगों की उत्कण्ठा महसूस होती—श्रीगुरुमाई के साथ गाने की उनकी उत्सुकता।

और जब भजन आरम्भ होते तो मुझे महसूस होता मानो गुरुमाई जी आश्रम में हर ईंट, हर पत्थर, हर दीवार, धूल के हर कण, पानी के हर अणु पर अपनी कृपा व आशीर्वादों के शुभचिह्न छोड़ रही हों। हरेक चीज़ श्रीगुरुमाई की कृपा से, उनकी शक्ति से ओत-प्रोत महसूस होती। यह अनुभव, एक ही समय में, रोमांचक भी लगता और प्रशान्ति से पूर्णतः भरा हुआ भी। एक ही समय में, हम ऊँची उड़ान भी भर रहे होते और पूर्ण रूप से स्थिर भी होते। वातावरण आह्लादमय ध्वनियों से पूरित होता। अपनी परम प्रिय गुरुमाई जी की उपस्थिति में, सन्त-कवियों का, नामदेव महाराज का साक्षात् अनुभव होता।

आज जब आप गुढीपाडवा के बारे में अधिक जान रहे हैं और गुढीपाडवा मनाना चाहते हैं तो एक मराठी व्यक्ति होने के नाते, एक सिद्धयोग संगीत सेवाकर्ता होने के नाते, मैं आपको प्रोत्साहित करता हूँ कि आप इस अभंग को सुनें और नामदेव महाराज के शब्दों में निहित सन्देश की सुन्दरता व गहनता को समझें और उसे सराहें।

* * *

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

इस भजन की रिकॉर्डिंग सिद्धयोग बुकस्टोर में
Sounds of the Heart [हृदय के बोल] नामक सी. डी. के रूप में उपलब्ध है।